# विश्वव्यापी आतंकवाद की दशा एवं दिशा

*डॉ0 उमारतन यादव,*

*एसोसिएट प्रोफेसर–अर्थशास्त्र,विभाग*
*बुन्देलखण्ड महाविद्यालय (झाँसी)*

## शोध सारांश

*आतंकवाद आज एक वैश्विक तथा सर्वभौमिक समस्या है। वास्तव में आतंकवादी पैदा नहीं होते हैं बल्कि आतंकवादी बनते हैं परिस्थितियोवश या फिर पैदा किए जाते हैं। किसी उद्देश्य के लिये, धर्म, जाति, या समाज के नाम पर। यदि किसी क्षेत्र का लगातार शोषण या फिर अवहेलना होती है तो लोगों में गुस्सा पैदा होता है। जो धीरे–2 नफरत और बाद में विद्रोह का नाम ले लेता है। अक्सर यह विद्रोह हिंसक हो जाता है और हिंसक आन्दोलन आतंकवाद का रूप ले लेता है। इसके अलावा कभी– कभी शासन समर्थित आतंकवाद भी होता है,जो स्वार्थी राजनेताओं के दिमाग की उपज होता है। और किसी देश और राष्ट्र को खतरे में डाल देता है।*

**Keywords:** *आतंकवाद,वैश्विक समस्या,बेरोजगारी,शरणस्थली*

आतंकवाद समकालीन समय की वैश्विक समस्या बन गयी है। इस विश्वव्यापी खतरे के प्रति सभी देश चिन्तित दिखाई दे रहे हैं और आज कोई भी देश ऐसा नही है, जहाँ आतंकवाद न पनप रहा हो। अमरीका आतंकवाद का लक्ष्य भी और शरणस्थली थी। आतंकवाद का मुकबला करने के लिए अमरीका में आधुनातन संयन्त्र एवं साधन विकसित किए हैं फिर भी इसे आतंकवाद से मुक्ति नही मिल पाई है। आतंकवाद प्रतिपल किसी के लिए संकट का वाहक और उसके प्राणों का ग्राहक बना रहता है न मालूम कब, कहाँ और किस पर उसकी गाज गिर जाए ? आतंकवाद आज परमाणु बम से भी अधिक भयावह बन गया है। आंतकवाद ने हमारे नैतिक पक्ष को इतना दुर्बल बना दिया है कि आज दुनिया का कोई भी देश आतंकवादी घटनाओं एवं आतंकवादियों के बारें बात करने से डरता है क्योंकि आतंकवाद का फंदा हर समय उसके समक्ष झूलता रहता है। आतंकवाद समाज का अभिशाप और कलंक है। आतंकवादी, गतिविधियों को देखकर यह प्रश्न उठता है कि क्या सभ्यता के उच्चस्तरीय विकास का दावा करने वाला मानव अपने पाशविक स्तर से ऊपर उठा है कि नहीं और क्या सभ्यता के विकास के लिए किए गये समस्त प्रयत्न सार्थक हैं। आतंकवाद ने आज जनजीवन को कठिन बना दिया है और सम्पूर्ण वातावरण को संत्रास संकुल भी कर दिया है।

विद्वानों ने आतंकवाद की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी हैं लियोन जे.बैंकर और चार्ल्फ ए. रसेल द्वारा ''आतंकवाद भय, बल प्रयोग, डॉट–डपट के द्वारा राजनीतिक उद्देश्य की सिद्धि के लिये शक्ति अथवा हिंसा के प्रयोग की धमकी अथवा वास्तविक प्रयोग के रूप में करता है।''

प्रो. कारपेटस ने लिखा है कि ''आतंकवाद हत्या, हिंसा प्रयोग, फिरौती या अन्य माँगों के लिये मनुष्यों के बंधक बनाने और बलात अपहरण करने के लिए विशेष संगठन या गुट बनाने की

ओर लक्षित अंतराष्ट्रीय रूप में अभिप्रेरित राष्ट्रीय घटना अथवा अन्य गतिविधि है । आतंकवाद का मतलब इमारतों का विनाश, उनमें लूटमार और इसी प्रकार के अन्य काम भी हो सकते हैं।'' आतंकवाद के कई अर्थ हैं–जैसे – उग्र हिंसा या हिंसा की धमकी देना, उग्रवाद, छापामार युद्ध, आन्तरिक युद्ध या क्रान्ति। यदि आतंकवाद की सरल शब्दों में परिभाषा दी जाय तो यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भय उत्पन्न करने की हिंसक कार्यवाही आतंकवाद कहलाता है।

आतंकवाद पैदा करने वाले व्यक्ति या संगठन को आतंकवादी माना जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति विशेष को नुकसान या सत्ताधारी प्रतिनिधि के उद्देश्यों में खलल पैदा करना होता है। आतंकवादी हमेशा संगठित रूप से हिंसा या आतंकवाद का सहारा लेकर विध्वंशता के कार्य करते हैं। वे हमेशा नकारात्मक कदम उठाते हैं। आतंकवाद शासनतंत्र की व्यवस्था को समूल नष्ट कर अपने अल्पकालिक लाभ को दृष्टिगत रखते हुए क्रान्ति या विद्रोह के रूप में फैलाया जाता है। आतंकवादियों के दो प्रकार के कार्य होते हैं – (1) राज्य विरोधी आतंकवाद तथा (2) राज्यतन्त्रीय आतंकवाद।

वैश्विक स्तर पर आतंकवाद की समस्या की निन्दा की जाती है,लेकिन आतंकवाद का कोई प्रभाव आतंकवादी गुटों की सक्रियता पर नहीं पड़ता है। संसार के कई प्रबल आतंकवादी संगठनों में जापान में रेड आर्मी एवं चुकाकूहा, इजराइल में गुरिल्ला छापामार, इटली में रेड ब्रिज, श्रीलंका में लिट्टे, पाकिस्तान में हिजबुल मुजाहिद्दीन, लश्कर–ए–ताइबा, जमात–उद–दावा, अफगानिस्तान में तालिबान एवं अलकायदा तथा भारत के जम्मू कश्मीर राज्य में लिबरेशन फ्रंट तथा ईराक में कुर्द आदि प्रमुख आतंकवादी संगठन सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ आतंकवादी संगठन अब खत्म हो चुके हैं क्योंकि उसदेश में समस्याओं का समाधान किया जा चुका है। फिर भी अभी भी बहुत से आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं तथा हिंसा, आगजनी, तोड़–फोड़ की कार्यवाही में सक्रिय भाग ले रहे हैं। अमेरिका ने अपनी रिपोर्ट में पाकिस्तान के बारे में जो बाते कही हैं, उसे भारत काफी पहले से कहता आ रहा है। दुनिया भर में आतंकी घटनाओं में इतनी ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई, उसमें पाकिस्तान जैसे देश का बहुत बड़ा हाथ है। भारत विरोधी आतंकवाद को बढ़ाना पाकिस्तान देश की विदेश नीति का अहम हिस्सा है। अमेरिका ने रिपोर्ट में इस बात का जिक्र कर सिर्फ भारत की चिंता पर मुहर लगाई है। भारत विरोधी आतंकवाद को रोकने के लिए अमेरिका पाकिस्तान पर कितना और किस तरह का दबाव बनाएगा इसके बारे में फिलहाल कुछ भी नही कहा जा सकता है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आतंकवाद की संरचना में कई तत्व सम्मिलित होते हैं जैसे उनका संगठन, उनका निश्चित उद्देश्य, भय की भावना, हिंसात्मक गतिविधि इत्यादि। आतंकवाद पैदा करने के स्थान निर्धारित होते हैं, जैसे– बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, सिनेमाघर, बाजार, धार्मिक स्थल या गहन आबादी या जनसंख्या बाहुल्य के स्थान। आतंकवादी हवाई जहाजों का अपहरण भी करते हैं। बम विस्फोट करके, अंधाधुंध गोली चलाकर या हवाई फायर करके जन–समुदाय को आतंकित या भयभीत करते हैं। वे जान–माल की क्षति कर आतंक का वातावरण कायम करते हैं। उन्हें अपने प्राणों की परवाह नहीं होती है। इसका ज्वलंत प्रमाण आतंकवादी कार्यवाहियों में मानव बम के प्रयोग में दिखायी देता है। इससे स्पष्ट है कि जैसे–जैसे विज्ञान एवं तकनीकी का विकास तीव्र गति से हो रहा है, उसी तीव्र गति से आतंकवादी भी आधुनिक हथियारों एवं आधुनिक तौर तरीकों का प्रयोग कर अपने लक्ष्य को भेदने का प्रयास करते हैं।

आतंकवादी गतिविधियों पर एक विश्लेषणात्मक नजर डाली जाय तो स्पष्ट रूप से विभिन्न कारणों के समवेत रूप से यह समस्या दिनों–दिन विकराल रूप लेती जा रही है। वास्तव में इसके पनपने के कई कारण समाज में उत्तरदायी हैं। उदाहरण के लिए बढ़ती जनसंख्या एवं उससे उत्पन्न बेरोजगारी एवं उससे उत्पन्न हताशा। इसी कारण व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनुचित रास्तों की तरफ मुड़ जाता है। आतंकवादी संगठन व्यक्ति की इस मनःस्थिति का लाभ उठाता है तथा उन्हें आतंकवादी बना देता है। इसी के साथ वर्तमान शिक्षा पद्धति की कमजोरी भी व्यक्ति को गलत दिशा की ओर मोड़ देती है। यह शिक्षा व्यक्ति को व्यावहारिक ज्ञान के बजाय सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करती है। आतंकवादी गुट इस स्थिति का फायदा उठाकर दिशा भ्रम बेरोजगार युवाओं को आतंकवाद की ओर अग्रसर करते हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ


1. लल्लन (2003), ''राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा,'' सारिका ऑफसेट प्रेस, मेरठ।
2. चन्द्र, महेश व वी.के. पुरी (2005), '' रीजनल प्लानिंग इन इडिया,'' एलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
3. त्रिपाठी, मधुसूदन (2008), '' राष्ट्रीय एकता और आतंकवाद,'' ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. यादव, डॉ0 वीरेन्द्र सिंह (सम्पादक) (2010), '' नई सहस्राब्दी का आतंकवाद–संघर्ष के बदलते प्रतिमान,'' ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
5. यादव, डॉ0 वीरेन्द्र सिह (सम्पादक) (2010), '' बदलते परिदृश्य में नई सहस्राब्दी का भारत,'' ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
6. दत्त, रूद्र एण्ड के.पी.एम. सुन्दरम (2010), '' भारतीय अर्थव्यवस्था,'' एस. चॉद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।
7. कुरूक्षेत्र, 2006।
8. योजना, सितम्बर, 2006।
9. योजना, मई 2008।
10. त्रिपाठी, राशि (2010), '' आतंकवाद–मानवाधिकार : चुनौती और समाधान,'' ''बदलते परिदृश्य में नई सहस्राब्दी का भारत,''यादव वीरेन्द्र सिंह (सं), ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
11. सुंदर, नंदिनी (2011), ''इन्टर्निंग इनसर्जेन्ट पोपूलेशन्स : द बैरीड हिस्ट्रीज ऑफ इण्डियन डेमोक्रेसी,'' इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, फरवरी 5, 2011
12. कुरियन, एन.जे.(2000), '' वाइडनिंग रीजनल डिस्पेरिटीज इन इंडिया,'' इकोनॉमिक एण्ड पॉलीटिकल वीकली, फरवरी 12–18, 2000
13. सिंह,नौनिहाल (1989), '' द वर्ल्ड ऑफ टैररिज्म,'' साउथ एशियन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
14. खण्डेला, मानचन्द्र (2002), '' अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद,'' आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यटूर्स, जयुपर।


Copyright © 2017 *Dr. Umaratan Yadav*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.